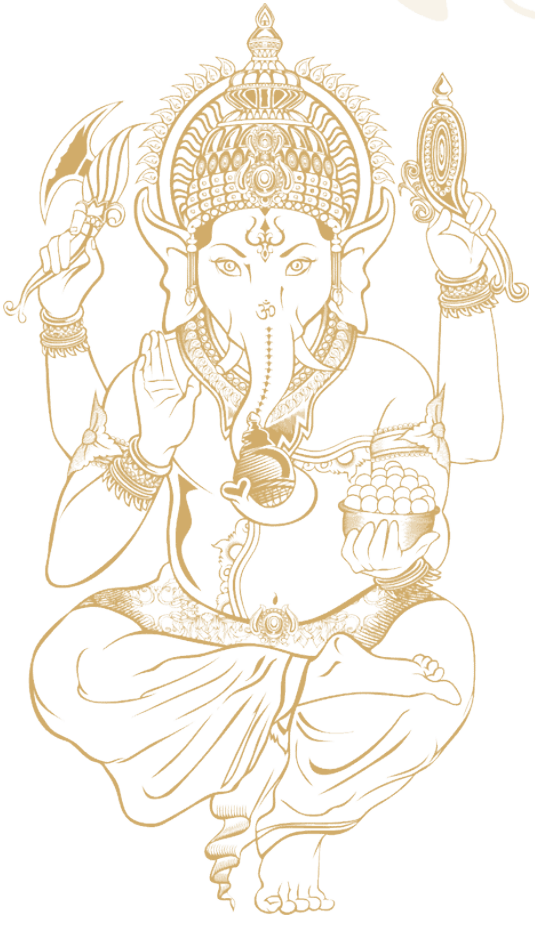

Mr.Aayush Bhandari

Ms.Surabhi Rathi

Model: Web-FreeMatching

Order No: 119304502

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
16/10/1999	जन्म तिथि	13/02/2001
शनिवार	दिन	मंगलवार
घंटे 12:12:00	जन्म समय	09:36:00 घंटे
घटी 14:40:17	जन्म समय(घटी)	06:43:42 घटी
India	देश	India
Solapur	स्थान	Hyderabad
17:43:00 उत्तर	अक्षांश	17:22:00 उत्तर
75:56:00 पूर्व	रेखांश	78:26:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:26:16	स्थानिक संस्कार	-00:16:16 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:19:53	सूर्योदय	06:44:09
18:03:55	सूर्यास्त	18:16:59
23:51:00	चित्रपक्षीय अयनांश	23:52:06

विंशोत्तरी	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी
शुक्र 19वर्ष 2मा 13दि	18:07:51	धनु	लग्न	मीन	22:40:03	राहु 17वर्ष 9मा 7दि
चन्द्र	28:36:33	कन्या	सूर्य	कुंभ	00:38:50	गुरु
28/12/2024	13:51:54	धनु	चंद्र	तुला	06:50:16	21/11/2018
29/12/2034	05:34:59	धनु	मंगल	वृश्चि	05:15:18	21/11/2034
चन्द्र 29/10/2025	21:22:19	तुला	बुध व	कुंभ	00:18:05	गुरु 08/01/2021
मंगल 30/05/2026	07:05:14	मेष व	गुरु	वृष	07:54:57	शनि 23/07/2023
राहु 28/11/2027	13:00:49	सिंह	शुक्र	मीन	14:19:15	बुध 27/10/2025
गुरु 29/03/2029	21:29:56	मेष व	शनि	वृष	00:32:07	केतु 03/10/2026
शनि 29/10/2030	15:58:33	कर्क व	राहु व	मिथु	20:53:24	शुक्र 03/06/2029
बुध 29/03/2032	15:58:33	मक व	केतु व	धनु	20:53:24	सूर्य 23/03/2030
केतु 28/10/2032	19:01:58	मक व	हर्ष	मक	27:09:39	चन्द्र 23/07/2031
शुक्र 29/06/2034	07:44:20	मक	नेप	मक	13:04:00	मंगल 27/06/2032
सूर्य 29/12/2034	14:47:20	वृश्चि	प्लूटो	वृश्चि	21:06:18	राहु 21/11/2034

लग्न-चलित

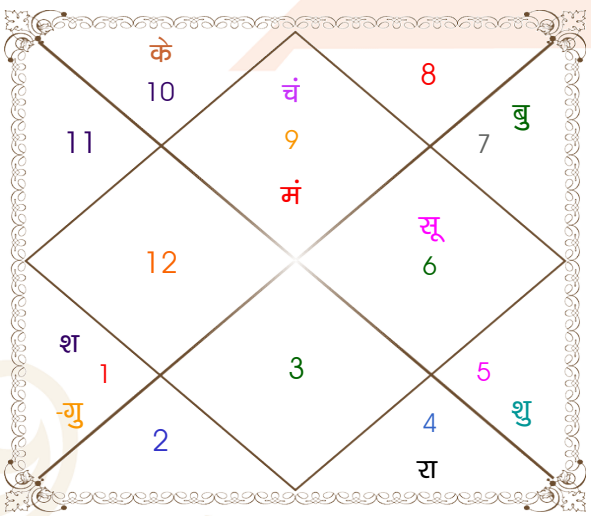

लग्न-चलित

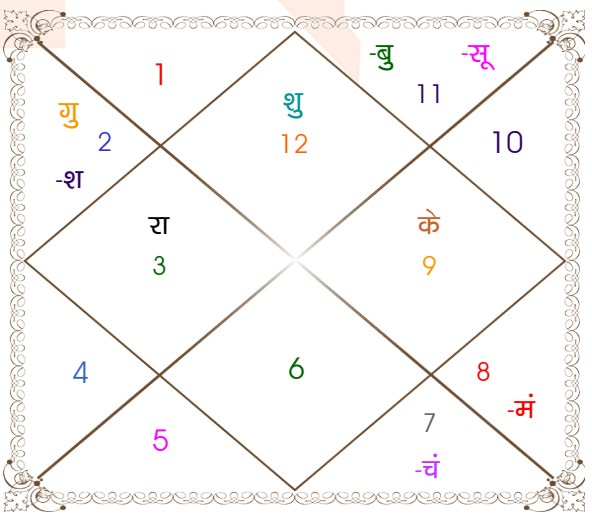

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	क्षत्रिय	शूद्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	मानव	मानव	2	2.00	--	स्वभाव
तारा	साधक	प्रत्यारि	3	1.50	--	भाग्य
योनि	वानर	महिष	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	गुरु	शुक्र	5	0.50	--	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	देव	6	5.00	--	सामाजिकता
भकूट	धनु	तुला	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	अन्त्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	27.00		

डतण ंलनी ठींदकंतप का वर्ग मूषक है तथा डेण्नतंइीप त्ंजीप का वर्ग मृग है। इन दोनों वर्गो में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार डतण ंलनी ठींदकंतप और डेण्नतंइीप त्ंजीप का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

डतण ंलनी ठींदकंतप मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं चन्द्र डतण ंलनी ठींदकंतप कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

डेण्नतंइीप त्ंजीप मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में नवम् भाव में स्थित है।

गुणबाहुल्ये भौमदोषो न विद्यते।।

यदि अधिक गुण मिलते हों तो मंगल दोष नहीं लगता।

क्योंकि अधिक गुण मिलते हैं अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।

त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि शनि डेण्नतंइीप त्ंजीप कि कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

डतण् ंलनी ठींदकंतप तथा डेण्नतंइीप त्ंजीप में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।